दिनांक :- 31-03-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- B.A पार्ट (I) प्रतिष्ठा इतिहास

पूर्व ऐतिहासिक काल (प्रागैतिहासिक काल) - और उसका विस्तृत स्वरूप :- प्रागैतिहासिक काल के स्थलों में जैसे-जैसे विकास के आयाम बदले वैसे-वैसे उसके तौर-तरीके बदले उनके ढंग में भी परिवर्तन आया। बैलन घाटी का क्षेत्र बलिया से लेकर पश्चिमी पंजाब का क्षेत्र आता है। इसमें फूस के झोपड़ी से लेकर कच्चे ईंट के मकान मिले हैं। चोपड़-चापड़ संस्कृति पिबुल संस्कृति कई जगह आठ चुल्हियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जो संयुक्त परिवार के साक्ष्य मिलते हैं। भीम-बेटका से मृदभांड व्रत गृह से शिकार के औजार पलामी से नव पाषाण और महा पाषाण के औजार प्राप्त

हुए हैं। फावड़ा, नौका, रुखानी, आदि तरह के औजार प्राप्त हुए हैं। यह सभी औजार कृषि से संबंधित हैं

(1) पुरा पाषाण काल (5 लाख ईसा पूर्व से 10 हजार ईसा पूर्व तक)
(2) मध्य पाषाण काल (10 हजार से 6 हजार ईसा पूर्व तक)
(3) नव पाषाण काल (6 हजार ईसा पूर्व के पश्चात्)

(1) पुरा पाषाण काल (Paleolithic era) :- भारत की पुरा पाषाणयुगीन सभ्यता का विकास प्लीस्टोसीन या हिम युग से हुआ। प्लीस्टोसीन काल में पृथ्वी की सतह का बहुत अधिक भाग मुख्यतः अधिक ऊंचाई पर और उसके आस-पास के स्थानों पर बर्फ की चादर से ढका था। आज से 10 लाख वर्ष पूर्व यह ग्रह अत्यंत ठंडा होने लगा। ध्रुव प्रदेशों से बड़े-बड़े हिमनद प्रचण्ड वेग के नीचे उतरे जो 50° या उससे भी नीचे अंक्षाशों तक पहुँच गये। फिर भूमध्य रेखा के निकट

30° से 25° तक ऊपर और नीचे प्रचण्ड मूसलाधार वर्षा प्रारंभ हो गई जिसका प्रभाव पृथ्वी तथा उसके विभिन्न जीवों पर पड़ा!

भारतीय पुरापाषाण काल को मानव द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पत्थर के औजारों के स्वरूप तथा जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर तीन अवस्थाओं में बांटा जाता है!

(i) आरम्भिक या निम्न पुरापाषाण युग (5 लाख से ईसा पूर्व)

(ii) मध्य पुरापाषाण काल (50 हजार से 40 हजार ईसा पूर्व)

(iii) उच्च पुरापाषाण काल (40 हजार से 10 हजार ईसा पूर्व तक)

(i) निम्न पुरापाषाण काल :- इसका अधिकांश भाग हिम युग से गुजरा है! इस काल के महत्वपूर्ण उपकरण हैं कुल्हाड़ी या हस्त कुठार, (Hand Axe) विदारणी, (Cleaver) खंडक, (Chopper)

1863 में रोबर्ट ब्रूसफुट ने मद्रास के समीप पल्लवरम

नामक से स्थल से हाथ की कुल्हाड़ी प्राप्त की, उसी समय अतिरमपक्कम से भी ऐसी ही एक कुल्हाड़ी प्राप्त हुई है।

इस समय मानव गंगा और यमुना के मैदान एवं सिंधु के कछारी मैदानों में नहीं बसा था।

इस युग में क्रोड़ उपकरणों की प्रधानता थी। कालान्तर में क्रोड़ उपकरणों की प्रधानता धीरे-धीरे कम होती गयी एवं शल्क उपकरणों की बढ़ती गयी। यह तकनीकी विकास का द्योतक था।

निम्न पुरापाषाण स्थल भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग सभी क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं। इनमें असम की घाटी भी सम्मिलित है। एक महत्वपूर्ण निम्न पुरापाषाण स्थल, सोहन की घाटी में मिलता है। यह सोहन संस्कृति के नाम से जाना जाता सोहन सिंधु नदी की एक सहायक छोटी नदी है। 1928 ई० में डी० एन वाडिया ने

Scanned with CamScanner

इस क्षेत्र में से पूर्व पाषाण काल का उपकरण प्राप्त किया। खोज के क्रम में सिंधु घाटी के पाँच स्थलों से अलग-अलग पाषाण उपकरण प्राप्त हुए इसे सोहन उद्योग कहा गया है।

सोहन घाटी उपकरणों को आरंभिक सोहन, उत्तरकालीन सोहन चौन्तरा तथा विकसित सोहन नाम दिया गया है। उत्तरकालीन सोहन के अंतर्गत चौन्तरा से प्राप्त उपकरणों का विशेष महत्व है। इन उपकरणों में प्राक सोहन के कुछ फलक, सोहन परम्परा के पेबुल तथा फलक तथा मद्रास परंपरा के हैन्ड एक्स आदि मिलते हैं। ऐसा लगता है कि चौन्तरा उत्तर तथा दक्षिण परंपरा का मिलन स्थल था।

निम्नलिखित स्थल निम्न पुरापाषाण से संबद्ध थे - सोहन घाटी, नर्मदा नदी के किनारे, आंध्र प्रदेश गिद्दलूर नेल्लोर दक्षिण बिहार में सिंहभूम, गुजरात में साबरमती तथा नालंदा